यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन

पं. दीनदयाल उपाध्याय का युगबोध

मानस पाण्डेय

पं. दीनदयाल उपाध्याय का युगबोध

मानस पाण्डेय

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का युगबोध

प्रो. मानस पाण्डेय
अध्यक्ष
पण्डित दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय
जौनपुर (उ.प्र.)

यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन
दिल्ली-110002

प्रकाशक / लेखक की अनुमति के बिना इस पुस्तक को या इसके किसी अंश को संक्षिप्त, परिवर्धित करना आदि कानूनी अपराध है।

शीर्षक : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का युगबोध

© लेखक / संपादक

लेखक : प्रो. मानस पाण्डेय

संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-92516-21-4

प्रकाशक :
यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन
22/4735, प्रकाश दीप बिल्डिंग,
अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002

मुद्रक :
इन-हाउस (सैल्फ)
दिल्ली-110 002

9. वर्तमान परिपेक्ष्य में पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी के अर्थचिंतन की प्रासंगिकता 74
– अनिल कुमार चौधरी

10. धर्मनिरपेक्षता एवं पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी का राष्ट्र चिन्तन 87
– विमलेश कुमार पाण्डेय

11. पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी के एकात्म मानवतावाद दर्शन की अवधारणा एवं स्वरूप का अध्ययन 97
– रश्मि दुबे, वन्दना शुक्ला

12. एकात्म मानव दर्शन की अवधारणा एवं स्वरूप 104
– नेहा कल्याणी

13. भारतीय समस्या का कारण : ''राष्ट्रीय पहचान की उपेक्षा'', एकात्म मानववाद–एक दृष्टि 109
– अखिलेश्वर शुक्ला

14. भारतीय संस्कृति और अर्थनीति : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी की वैचारिकी 113
– मुनेन्द्र सिंह एवं मीनाक्षी सिंह

15. पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी का राष्ट्रवादी चिंतन 117
– प्रियंका कुमारी

16. राष्ट्र के स्वरूप का एकात्म मानववादी विश्लेषण 120
– अच्छे लाल

17. वर्तमान समय में राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता 126
– सचिन राय

18. एकात्मवादिता दृष्टिकोण में भारतीय संस्कृति एवं अर्थनीति 141
– पीयूष कुमार श्रीवास्तव

एकात्म मानव दर्शन की अवधारणा एवं स्वरूप

• नेहा कल्याणी[1]

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी भारतीय राजनैतिक एवं आर्थिक चिंतन को वैचारिक दिशा देने वाले विचारक, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री इतिहासकार, पत्रकार एवं कियाशील पुरोधा थे। किसी भी देश के विकास के लिए आवश्यक है कि परिवर्तन सकारात्मक एवं सर्वहित से सम्बद्ध हो। व्यष्टि के स्तर पर विकसित मानव ही समष्टि स्तर पर विकास को प्राप्त कर सकता है। एकात्म मानववाद के रूप में दीनदयाल उपाध्याय जी ने समाज व राजनीति को भारतीय मार्ग का अनुगमन करने की सलाह दी है।यह प्रत्येक मनुष्य के शरीर,आत्मा मन और बुद्धि का एकीकृत रूप है। उनका कहना है कि एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत पश्चिमी अवधारण ाओं जैसे व्यक्तिवाद, लोकतंत्र, समाजवाद, साम्यवाद और पूंजीवाद पर निर्भर नहीं हो सकता, क्योंकि ये मूलतः भटकाव ज्यादा पैदा करता है, समाधान कम देता है। वर्तमान युग में जब भोगवादी विकास के सिद्धान्तों से संसाधनों के अनुचित प्रयोग से मानव के अस्तित्व पर ही संकट आ गया है, तब दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है।

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राजनैतिक एवं आर्थिक चिंतन को वैचारिक दिशा देने वाले विचारक, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री

1 सहायक व्याख्याता, गो.से. अर्थ–वाणिज्य महाविद्यालय, नागपूर

इतिहासकार, पत्रकार एवं क्रियाशील पुरोधा थे। उन्होंने ब्रिटिश शासन के दौरान भारत द्वारा पश्चिमी धर्मनिरपेक्षता और पश्चिमी लोकतंत्र के अन्धानुकरण का विरोध किया। उनका मत था कि आजादी के बाद भारत का विकास भारतीय संस्कृति के आधार पर हो ना कि अंग्रेजो द्वारा छोडी गयी पश्चिमी विचारधारा के अनुसार। उनका विचार था कि लोकतंत्र भारत का अधिकार है न कि अंग्रेजों द्वारा दयापूर्वक दिया गया उपहार। समग्रतावादी दार्शनिक होने के कारण वे किसी विशिष्ट आयाम को जीवन की समग्रता का नियामक मानने वालों से असहमत रहते है। वे उस परम्परा के वाहक थे जो नेहरू के भारत नवनिर्माण की बजाय भारत के पुनर्निमाण की बात करती है। किसी भी देश के विकास के लिए आवश्यक है कि परिवर्तन सकारात्मक एवं सर्वहित से सम्बद्ध हो। व्यष्टि के स्तर पर विकसित मानव ही समष्टि स्तर पर विकास को प्राप्त कर सकता है।

एकात्म मानववाद (Integral Humanism) की अवधारणा:– एकात्म मानववाद के रूप में पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी ने समाज व राजनीति को भारतीय मार्ग का अनुगमन करने की सलाह दी है। इस अवधारणा का उद्देश्य एक ऐसा स्वदेशी सामाजिक आर्थिक मॉडल प्रस्तुत करना था, जिसमें विकास के केन्द्र में मानव हो।समाज में भेदभाव व विषमता दूर करने के लिए आवश्यक है कि आर्थिक साधनों का विभाजन समता के साथ हो। उनके द्वारा स्थापित एकात्म मानववाद (Integral Humanism) की अवधारणा पर आधारित राजनैतिक दर्शन भारतीय जनसंघ की देन है। यह अवधारणा प्रत्येक मनुष्य के शरीर, आत्मा मन और बुद्धि का एकीकृत रूप है। उनका कहना है कि एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत पश्चिमी अवधारणाओं जैसे व्यक्तिवाद, लोकतंत्र, समाजवाद, साम्यवाद और पूंजीवाद पर निर्भर नहीं हो सकता, क्योंकि ये मूलत: भटकाव ज्यादा पैदा करता है,समाधान कम देता है। समाजवाद और साम्यवाद सतही और अव्यावहारिक होने से भारतीय मेधा इन पश्चिमी विचारधाराओं और सिद्धान्तों से घुटन महसूस कर रही है। भारतीय राजनीति के सफल संचालन के लिए भारतीय दर्शन को उपयुक्त मानकर उन्होंने मानव व्यवहार, व्यक्ति और समाज, मानव विकास के मौलिक प्रश्नों पर चिन्तन करके भारत के युगयुगीन सांस्कृतिक चिन्तन पर आधारित एकात्म मानववाद की अवधारणा स्थापित की। वे मानव को विभाजित करने के विरोधी थे, उसके विकास के लिए एकात्म दृष्टि चाहिये।

वे मानव के जीवन से सम्बन्धित हर छोटी या बड़ी आवश्यकता के मूल्यांकन की बात करते है। उन्होनें मानव के समग्र विकास को एकात्म कहा है।

एकात्मवाद को समझाने के लिए पण्डित दीनदयाल जी ने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों को समझाया है–अर्थ और काम की साधना तो मनुष्य करेगा ही लेकिन इन दोनों क्षेत्रों में कर्म करने के लिए धर्म की सीमा रेखा निश्चित है। इन तीन पुरुषार्थों की साधना करते हुए मानव जीवन का लक्ष्य मोक्ष होना चाहिये। इस अवधारणा को वे इस तरह से भी समझाते है कि जैसे एक ही व्यक्ति पिता, भाई और बेटा है। ये सभी संबंध एक दूसरे से जुड़े है यही मानव प्रकृति की एकात्मकता है। पश्चिम के एकांगी मॉडलों पूंजीवाद, मार्क्सवाद और समाजवाद आदि के विकल्प के रूप में वे ऐसी राह के पक्षधर थे, जिसमें दोनों प्रणालियों के गुण तो मौजूद हों किन्तु अतिरेक व अलगाव जैसे अवगुण ना हों। उनके विचार से ये विचारधारायें मनुष्य का भौतिक विकास तो करती है, पर आत्मिक विकास नहीं। इन एकांगी मॉडलों के विकल्प में मानव विकास का एकात्मवादी भारतीय मॉडल प्रस्तुत किया। ऋषि परम्परा से सम्बद्ध यह कोई विचारधारा नहीं अपितु समरसता दर्शन है।

देश के सुशासन के लिए उनका मानना था कि सरकार को व्यापार नहीं करना चाहिये। व्यापार का क्षेत्र गैरशासकीय विभाग के अधीन होना चाहिये। व्यापार को अपने हाथ में लेने पर भ्रष्टाचार से लिप्त होने से कर्मचारियों से शासन क्षतिग्रस्त हो सकता है।वे सामाजिक संस्थाओं के राष्ट्रयीकरण के खिलाफ थे। वे विकेन्द्रित व्यवस्था के पक्षधर थे। उनका मत था कि भारत के मेहनतकश लोगों को अपनी बुनियादी जरूरतों के लिए सरकार पर आश्रित नहीं होना चाहिये। सत्ता व समाज दोनों को जिम्मेदारी से काम करने की वे प्रेरणा देते है।समाज के सबसे निचले पायदान पर जो व्यक्ति है, उसके उत्थान का प्रयास प्राथमिकता से होना चाहिये। जिस प्रकार भवन निर्माण में पहले छत नहीं बनायी जा सकती, निर्माण नींव से शुरू होता है। इसी प्रकार जब भवन की सफाई करनी होती है तो इस कार्य में फर्श का नंबर अंत में आता है। यह समाज और सत्ता दोनों पर लागू होने वाला विचार है।

वे प्रशासन द्वारा प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान करना आवश्यक मानते थे। उनके अनुसार लोकतंत्र अपनी सीमाओं से परे नहीं जाना चाहिये और

जनता की राय उनके विश्वास और धर्म के आलोक में सुनिश्चित करना चाहिये। शिक्षा व्यवस्था के सरकारीकरण के वे सख्त विरोधी थे। उनका कहना था कि सरकार का नियन्त्रण उन्हीं क्षेत्रों में होना चाहिये, जिन क्षेत्रों में निजी क्षेत्र जोखिम नहीं ले सकते। सरकार आश्रित प्रजा तैयार करने की समाजवादी नीति किसी भी देश को पंगु बना देती है। सामाजिक पंगुता के इस खतरे से बचने के लिए हमें दीनदयाल जी के चिंतन व वैचारिक दर्शन को समझकर अपनाना ही होगा।

एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता:–21वी सदी के प्रथम दशक के अंतिम वर्ष की ओर हम बढ रहे हैं, फिर भी हम सबके सामने एक यक्ष प्रश्न है कि विकास का पैमाना क्या है? क्या होनी चाहिए विकास की सही परिभाषा कि जिसके आधार पर हम कह सके कि हम कहाँ पहुँचे है? हमे कहाँ जाना है? हमारी मंजिल क्या है? विज्ञान की प्रगति की इस पराकाष्ठा के युग में यदि हम मानव जाति के समग्र उत्कर्ष की परिभाषा तक तय नहीं कर पाये तो निसन्देह यह दर्शन अनुकरणीय व विचारणीय है।

शाश्वत विचारों पर एवं पण्डित उपाध्याय जी की रचनात्मक दृष्टि पर आधारित यह आज भी प्रासंगिक है। विदेशी विचारधाराओं को एकांगी एवं अनुपयुक्त मानकर एकत्व व पूरकता के इस दर्शन का उन्होंने प्रतिपादन किया।भारतीय संस्कृति संपूर्ण जीवन व सृष्टि का संकलित विचार करती है। संसार में एकता का दर्शन, उसके विविध रूपों के बीच परस्पर पूरकता पहचानकर अनुकूलता का विकास एवं संस्कार करना ही संस्कृति है। प्रकृति के ध्येय की सिद्धि के लिए अनुकूल बनाना संस्कृति और उसके प्रतिकूल बनाना विकृति है। भारतीय संस्कृति में एकात्म मानव दर्शन है और मानव केवल व्यक्ति मात्र नही है अपितु शरीर मन बुद्धि और आत्मा के इस समुच्चय की समाज व समष्टि में अहम भूमिका होती है। वर्तमान युग में जब भोगवादी विकास के सिद्धान्तों से संसाधनों के अनुचित प्रयोग से मानव के अस्तित्व पर ही संकट आ गया है, तब पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी के एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता और भी बढ गई है। बहुत छलावे में जी चुके हम अपनी अवशिष्ट जिन्दगी में क्रांतिकारी बदलाव लाना है तो हमें विकास के इस नये मापदण्ड को अपनाना होगा जो हमें हमारी परम्परा से जोड़ता है।

भारत में एकात्मवाद मानववाद ने पश्चिमी विचार दर्शन सम्बन्धी व्यवस्थाओं की अपूर्णता एकांगीपन असन्तुलन और व्यर्थता को पूरी तरह स्पष्ट कर दिया है। एकात्मवादी इस व्यवस्था ने हमें ऐसे विश्व राज्य के उदय की संभावना से अवगत करा दिया है, जिसमें सभी देशों की राष्ट्रीय संस्कृतियां अपना अपना विकास करते हुए मानवता को समृद्ध बनाने में सहायक हो सकेगी परिणामतः ऐसे मानव धर्म का विकास हो सकेगा जिसमें भौतिकता सहित संसार में सभी मजहब पंथ या रिलीजन अपनी पूर्णता के साथ अपना योगदान कर सकेंगे।

एकात्म मानववाद एक ऐसा दर्शन है, जो अपनी प्रकृति में एकीकृत एवं संधरणीय है। इसका उद्देश्य व्यक्ति एवं समाज की आवश्यकता को संतुलित करते हुए प्रत्येक मानव को गरिमापूर्ण जीवन सुनिश्चित करना है।यह प्राकृतिक संसाधनों के संधारणीय उपभोग का समर्थन करता है, जिससे कि उन संसाधनो।की पुनः पूर्ति की जा सके। यह सिद्धान्त न केवल राजनैतिक बल्कि आर्थिक एवं सामाजिक स्वतंत्रता का भी समर्थन एवं संवर्धन करता है। यदि विज्ञान में नये अविष्कार होना, भव्यता का जीवन में समावेश करना, चकाचौंध में खोना यही विकास है तो फिर रोज अंशात होकर ढेरों व्यक्ति क्यों आत्महत्या कर रहे है? निराशा जैसे मनोविकार क्यों अपने पैर हमारी जिन्दगी में फैला रहे हैं? बढ़ती समृद्धि पर संयुक्त से एकल परिवार क्यों? संस्कृति, योग, आध्यात्म व शांति का मार्ग अपनाने वाला भारत क्यों पाश्चात्यवाद, भौतिकवाद, एवं अनात्मवादी रास्ते पर क्यों जा रहा है? दूरदर्शी पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी शायद ही इसी समस्या के समाधान रूप में हृदय, मस्तिष्क और शरीर तीनों का विचार कर भौतिकवाद और आध्यात्मवाद का समन्वय करना चाहते थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. पण्डित दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वाङ्मय – प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
2. पण्डित दीनदयाल उपाध्याय– हरीश दत्त शर्मा, डायमंड पॉकेट बुक्स, 2005, दिल्ली।
3. भारतीयता का संचालक–सम्पादक संजय द्विवेदी, विज्डम पब्लिकेशन, दिल्ली।
4. Integral Humanism – Deendayal Upadhyay, Prabhat Prakashan.